MR. BAIJU BAWRA
DOC
A.N.D. College
25.5.2020

B.Ed –
Course –
Unit –
Topic – Importance of Mother Language.

Importance of Mother Language.

जिस प्रकार माता और मातृभूमि के सम्मुख हमारा मस्तिष्क श्रद्धा से नत हो जाता है, उसी प्रकार मातृभाषा भी वन्दना के योग्य है। बालक परिवार और समाज में रहकर भाषा को सीखता है। बालक जितनी कुशलतापूर्वक स्वाभाविक ढंग से मातृभाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान कर सकता है उतना अन्य किसी भाषा के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करने और समझने की सामर्थ्यता नहीं रखता है। इसीलिए मातृभाषा वो वह भाषा है जिसके द्वारा व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव होता है। अतः विद्यालयों में मातृभाषा की शिक्षा देना परमावश्यक है। पूर्वी पंजाब, उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश और दिल्ली में हिन्दी मातृभाषा है लेकिन संपूर्ण भारत की यह राष्ट्रभाषा या संपर्क भाषा है। विदेशों में हिन्दी को एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। समस्त देश में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में पढ़ाने की चेष्टा की जा रही है। मातृभाषा समस्त भाषाओं में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बालक की प्रथम भाषा होती है, इसीलिए हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

1. पूर्णता की अनुभूति (Filling of Completeness)

Scanned with CamScanner

→ शिक्षा का मूल आधार (Basic of Education)

→ अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता (Natural Feeling in speaking)

→ सामाजिकता में सहायक (Helpful in Socializing)

→ व्यक्तित्व का विकास (Development of personality)

→ सांस्कृतिक महत्ता (cultural Importance)

→ सामाजिक कुशल नागरिक (social skilled citizen)

→ ज्ञानोपार्जन का साधन (Source of learning)

→ मातृभाषा द्वारा विकास (Development Through mother language)

स्मिथ के अनुसार —
मातृभाषा का शैक्षणिक विकास निम्न रूप में होता है।

1	वर्ष में औसत	3 शब्द सीखता है।
2	"	272 "
3	"	896 "
4	"	1540 "
5	"	2072 "
6	"	2563 "

अतः मातृभाषा साहित्य के गहन अध्ययन से फलस्वरूप मौलिक चिंतन की मौलिक ग्रंथ के निर्माण की प्रेरणा दे सकेगा इसीलिए सृजनात्मक शक्ति के विकास हेतु मातृभाषा का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner